जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

सामनुस्मर युद्धय च
जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ

भारत सरकार पंजीसन नं. : 72322/91

शेखावाटी स्वमार्ग

सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषा तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्ग मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक/वर्ष-31/अङ्क - 30 | लक्ष्मणगढ़ 01 मार्च 2022 | मूल्य (विशेषाङ्क सहित) 100/- रु.वार्षिक

शेखावाटी का विशिष्ट मेला – खाटू श्याम जी का लक्खी मेला मन्दिर की सजावट इस बार वृन्दावन के प्रेम मन्दिर की तरह होगी

सजावट पर 30 लाख रु. व्यय होंगे

खाटूश्यामजी के लक्खी मेले में मंदिर परिसर प्रवेश द्वार कोई भी दी जाती है। इस कार मंदिर के जीर्णोद्धार के बाद बनने कले स्वरूप पर आधारित होगा। ये स्वरूप वन के प्रेम मंदिर समान दिखाई देगा। इसके लिए 100 बाली करोगर जुटे हुए हैं। मेला छह मार्च से शुरू होगा ये काम पास मार्च को पूरा कर दिया जाएगा। 30लाख की आएगी। श्री श्याम मंदिर कमेटी के ट्रस्टी मानवेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि पहली बार भक्त प्रस्तावित श्याम मन्दिर की झलक देख पाएंगे। पिछली साल राधा – कृष्ण के मन्दिर तर्ज पर मन्दिर सजावट की थी।

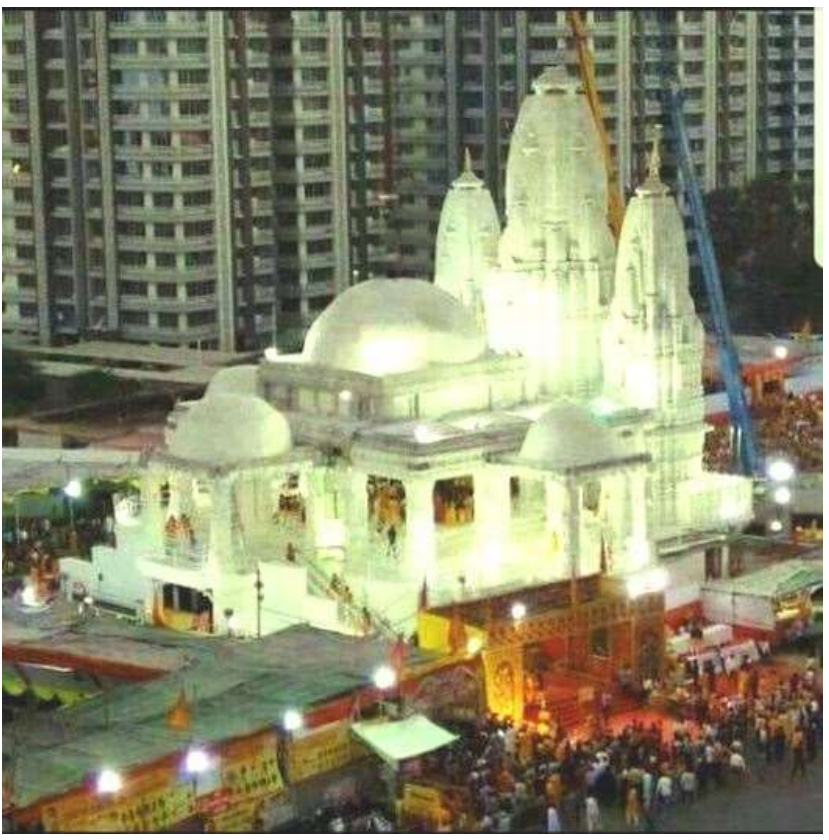

वृन्दावन के मन्दिर की तरह ऐसे सजेगा बाबा श्याम का दरबार। (इनसेट) खाटू मन्दिर में चल रही तैयारियां। श्री श्याम मन्दिर कमेटी के अध्यक्ष शंभूसिंह चौहान ने बताया कि इस बार नया ट्रेंड देखने में आ रहा है। फाल्गुन मेले में भीड़ से बचने के लिए मेले से पहले ही दर्शन करने पहुंच रहे हैं। इनमें कई श्रद्धालु वैक्सीनेशन की दोनों डोन का प्रमाण पत्र, आरटी-पीसीआर रिपोर्ट नहीं लेकर आ रहे हैं। इसलिए उन्हें श्याम बाबा के निकास द्वार के सामने ही धोक देकर लौटना पड़ रहा है। बाबा श्याम के 10 दिवसीय फल्गुन मेले में भीड़ बढ़ने से फागुन शुरू होते ही बाबा की नगरी में भक्तों के पहुँचने का दौर शुरू हो गया है।

दर्शन के प्रबंध : नौ जिग-जैग से होकर दर्शनों को पहुंचेंगे भक्त

मेले की तैयारियों को अंतिम रूप देने के लिए प्रशासन की तय गाइडलाइन में श्री श्याम मंदिर कमेटी तैयारी में जुटी है।" कमेटी रींगस से खाटूश्यामजी सड़क मार्ग पर रोशनी, पेयजल, पार्किंग व्यवस्था करवा रही है। चारण मैदान व लखदातार मैदान में नौ जिग-जैक बनाए गए हैं। यात्री इनसे. प्रवेश करते हुए मंदिर तक पहुंचेंगे, जहां से आठ कतार में दर्शन करेंगे। मेला मैदान में पानी के 45 लाख पाऊच मंगवाए गए हैं। 300 सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। दर्शन में कोई बाधा नहीं आए इसलिए निकास, व्यवस्था भी बढ़ाई है।

लक्ष्मणगढ़ के भूमा बासनी क्षेत्र में मुख्यमंत्री सड़क योजना में बनी है 2.75 किमी लम्बी रोड, कार्रवाई की मांग की

68 लाख की लगत से 15दिन पहले बनी सड़क, घटिया सामग्री से उखड़ने लगी रोड

भूमा बासनी क्षेत्र में 68 लाख 75 हजार रुपए की लागत वाली सड़क का निर्माण 15 दिन पहले ही पूरा हुआ है, लेकिन वह जगह जगह से उखड़ने लगी है। सड़क में घटिया निर्माण सामग्री का उपयोग का आरोप लगाते हुए ग्रामीणों ने संपर्क पोर्टल पर शिकायत की है। ग्रामीणों के अनुसार सड़क निर्माण के दौरान 15 दिन पहले डाले गए डामर की परतें हाथ से ही उतरने लगी हैं। इसके अलावा रोड की साइडों में न तो ग्रेवल डाला है तथा न ही लेविलंग की गई है। ग्रामीणों ने निर्माण की गुणवत्ता व मैटेरियल की जांच करव कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

मामले में पीडब्ल्यूडी के एईएन प्रकाशचंद का कहना है कि सड़क का कार्य प्रगति पर है। अभी रोड फिनिशिंग का काम चल रहा है। काम गुणवत्ता के साथ ही किया जा रहा है। कहीं मामूली डिफेक्ट की शिकायत है तो उसे निश्चित रूप से ठीक करवाया जाएगा। अभी किलोमीटर स्टोन सहित रोड फिनिशिंग का काम चल रहा है। उसके बाद जो भी डिफेक्ट है, उन्हें दुरूस्त किया जाएगा।

मुख्यमंत्री सड़क योजना के अंतर्गत बासनी से मेवा की ढाणी तक 68 लाख 75 हजार रुपए की लागत से 2.75 किमी सड़क का काम हाल ही में हुआ है। ग्रामवासी लक्ष्मण सिंह शेखावत, मनोहर सिंह, सत्यप्रकाश ढाका, रवि ढाका, रमेश ढाका, अरविंद आलड़िया' व वीरेन्द्र सिंह के अनुसार सड़क निर्माण में अनियमितता के साथ ही घटिया सामग्री का प्रयोग किया गया है। इस 'महीने 12 फरवरी को सड़क पर डामर डाला गया था जो 15 दिन के अंदर ही जगह जगह से उखड़ने लगा है। ग्रामीणों के अनुसार जितनी दूर में सड़क बनी है, कहीं से भी हाथ से ही डामर की परतें आसानी से उखड़ रही है।

दांता से खाटू तक सड़क टूटी

दांतारामगढ़ दांता से खाटू तक की सड़क बारिश के दिनों से ही पूरी तरह क्षतिग्रस्त है। इसके कारण वाहन चालकों वे आम लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों ने बताया कि दांता कस्बे से खाटू तक जगह-जगह से सड़क पूरी तरह से टूटी से हुई है। जगह-जगह गड्ढे पड़े है। सड़क खराब होने के कारण चालक परेशान हैं।

रग रग हिन्दू मेरा परिचय

हिन्दू तन मन हिन्दू जीवन रग रग हिन्दू मेरा परिचय –
मैं शंकर का वह कोधानल, कर सकता जगति क्षार क्षार,
डमरू की वह प्रलय ध्वनि हूँ, जिसमें बजता भीषण संहार
रण चंडी की अतृप्त प्यास, मैं दुर्गा का उन्मत्त हास
मैं यम की प्रलयंकर पुकार जलते मरघट का धुंआधार
फिर अन्तर तम की ज्वाला से यदि जग में आग लगा दूँ मैं,
धधक उठे जल थल अम्बर, जड़ चेतन तो फिर कैसा विस्मय
हिन्दू- तन मन..... मेरा परिचय
मैं आदि पुरुष, निर्भयता का वरदान लिये आया भू पर,
पय पीकर सब मरते आये मैं अमर हुआ लो विष पीकर,
अधरों की प्यास बुझाई है मैंने पीकर वह आग प्रखर,
हो जाती दुनिया भस्मसात् हा ! जिसको क्षण भर ही छूकर,
भय से व्याकुल दुनिया ने तब प्रारम्भ किया मेरा पूजन
मैं नर नारायण नील कंठ बन गया न कुछ इसमें संशय
हिन्दू- तन मन..... मेरा परिचय
मैं अखिल विश्व का गुरु महान् देता विद्या का अमर दान,
मैंने दिखलाया मुक्ति मार्ग, मैंने सिखलाया ब्रह्म ज्ञान,
मेरे वेदों की ज्योति प्रखर मेरे वेदों का ज्ञान अमर,
जगति के मन का अंधकार कब क्षण भर ही रह सका ठहर,
मेरा स्वर नभ में छहर छहर, सागर के जल में लहर लहर,
इस कोने से उस कोने तक, कर सकता जगति सौरभमय
हिन्दू- तन मन..... मेरा परिचय
दुनिया के वीराने पथ पर जब जब नर ने खाई ठोकर,
दो आंसू शेष बचा पाया जब जब, मानव सब कुछ खोकर,
मैं आया तभी द्रवित होकर, मैं आया ज्ञान दीप लेकर,
भूला भटका मानव पथ पर, चल निकला सोते से जग कर,
जग के आवर्तों में फंस कर, जो बैठ गए अपने पथ पर
उन सबको राह दिखाना ही, मेरा सदैव का दृढ निश्चय
हिन्दू- तन मन..... मेरा परिचय

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथ: क्वचित् "

अखण्ड है कल्याण ज्योति

अग्निर्वै देवानां मुखम् । अग्निमुखाः वै देवाः ।

अग्नि परमात्मा का मुख है। अग्नि द्वारा भगवान् आरोगते हैं। घर में तुम ठाकुर जी को भोग धरो, परंतु अग्नि में आहुति न दो, तब तक प्रभु तृप्त होते नहीं। अग्नि में आहुति देनी ही चाहिये। शास्त्र में लिखा है कि घर में रसोई हो तो उसमें अनेक जीवों की हिंसा भी होती है। रसोई बनाने में अनेक जीव मरते हैं और उस हिंसा का पाप अन्न में भी आ जाता है। अन्न द्वारा यह पाप खाने वाले के माथे आता है। अन्न से मन न बिगड़े, इसलिये अन्न को शुद्ध करना बहुत जरूरी है। अन्न को शुद्ध करने के लिये अग्नि में आहुति दी जाती है।

गृहस्थके घरमें पंच महायज्ञ होना चाहिये। देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ और भूतयज्ञ-ये पाँच महायज्ञ कहे गये हैं।

देवता वर्षा करते हैं, उससे अन्न की उत्पत्ति होती है। इसलिये उनको आहुति देनी आवश्यक है। इन्द्र, वरुण, अग्नि आदि देवताओं को आहुति देना, उनका पूजन करना देवयज्ञ कहा जाता है।

उपनिषद्, महाकाव्य, इतिहास-पुराण आदि अमूल्य ज्ञान का उत्तराधिकार हमें ऋषियों ने दिया है। ऋषियों के हमारे ऊपर अनन्त उपकार हैं। प्राचीनकाल में गृहस्थ प्रथम अरण्य में जाकर ऋषियों को जिमाता और तब पीछे ही स्वयं भोजन करता। यह ऋषियज्ञ कहलाता है।

हमारे ऊपर पूर्वजों का बड़ा ऋण है। यह शरीर पित्रीश्वरों का आभारी है और इसी से रोज पितृ श्राद्ध करना गृहस्थ का धर्म है। इसको पितृयज्ञ कहते हैं।

भूखे मनुष्यों को भोजन देने को मानवयज्ञ कहते हैं। आँगन में कोई गरीब आये, कोई भिखारी आये, कोई साधु-ब्राह्मण आये, आस-पास पड़ोस में कोई भूखा हो उन सबको जिमाकर जीमना गृहस्थका धर्म होता है।

इस जगत् के प्रत्येक प्राणी के प्रति मनुष्य का कुछ धर्म है। पशु-पक्षी आदि मूक प्राणियों को अन्न से तृप्त करने को भूतयज्ञ कहते हैं। आकाश, तेज, जल, वायु और पृथ्वी- ये पाँच महाभूत कहलाते हैं। प्रत्येक के एक-एक अधिष्ठाता देव हैं। इन देवों का पूजन करना, इनके लिये आहुति देने को भी भूतयज्ञ कहा जाता है।

प्रत्येक गृहस्थ को ये यज्ञ रोज करने ही चाहिये। कितने ही लोग ठाकुर जी को थाल तो धरते हैं, परंतु अग्नि में आहुति देते नहीं। कथा सुनने के पीछे रोज अग्नि में आहुति दो। कदाचित् तुमको ऐसा लगता होगा कि महाराज! आप कहते हैं, परंतु हमको तो कोई मन्त्र नहीं आता। तुमको 'हरे राम, हरे कृष्ण' बोलना तो आता है न? वही बोलो। भात में थोड़ा घी डालो, भात को घी युक्त करके अग्निदेव को जिमाओ। अग्नि की ज्वाला ठाकुर जी की जीभ है। जैसे माँ बहुत प्रेम से बालक के मुख में ग्रास-ग्रास देती है, वैसे ही तुम भी प्रेम से ऐसी भावना रखो कि मैं अपने ठाकुर जी के मुख में देता हूँ। ब्राह्मण पवित्र वेदमन्त्र बोलकर परमात्मा के मुख में आहुति देते हैं, प्रभु को जिमाते हैं।

स्मार्त वैश्वानर को – अग्निदेव को आहुति देने के पीछे भगवान् को भोग धरते हैं। स्मार्त लोग ऐसा मानते हैं कि अग्नि में आहुति देने से ही अन्न शुद्ध होता है और अन्न शुद्ध हो जाय तभी परमात्मा को अर्पण करना चाहिये। अशुद्ध अन्न भगवान् को क्यों अर्पण हो ?

वैष्णवों की ऐसी भावना होती है कि ठाकुर जी न आरोगें, तब तक अग्निदेव भोजन करते नहीं। इससे वैष्णव प्रथम भगवान् को भोग धरते हैं और पीछे अग्नि में आहुति देते हैं।

दो - में से कोई भी सिद्धान्त अपनाओ। भगवान् को भोग धर के अग्नि में आहुति दो अथवा प्रथम अग्नि में आहुति देकर पीछे भगवान् को भोग धरो। दोनों सिद्धान्तों में अग्नि उपासना आवश्यक है। अग्नि और सूर्य – ये दो देव प्रत्यक्ष हैं। अरे, पेट में भी अग्नि है, इसीलिए मानव जीवित रहता है। पेट में रहने वाले अग्नि देव शांत हों तो पीछे **'अच्युतं केशवम्'** हो जाता है, मरण हो जाता है। अग्नि के आधार से जो रसोई हुई, उसमें से अग्नि में आहुति दिये बिना जो खाता है, वह पाप खाता है। जो परमात्मा को भोग धरता नहीं, अग्नि में आहुति देता नहीं और स्वयं खा लेता है, वह अन्न खाता नहीं, पाप खाता है। जो केवल स्वयं के लिये राँधकर खाता है, वह पाप खाता है।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

जब अग्नि में आहुति दो तब भगवान् का स्मरण करो और ऐसा भाव रखो कि ठाकुर जी को जिमाता हूँ। फिर वह अन्न अन्न नहीं रहता, अमृत बन जाता है। खाना पाप नहीं है, परंतु भगवान् को अर्पण किये बिना खाना पाप है। भगवान् को नैवेद्य ग्रहण कराये बिना खाना नहीं। नारायण का ही है और नारायण को ही अर्पण करना है। प्रेम से अर्पण करोगे तो भगवान् प्रसन्न होंगे।

ईश्वर को तो कोई अपेक्षा नहीं। वे तो स्वयं आनन्द स्वरूप हैं। ठाकुर जी को ऐसी इच्छा नहीं कि वैष्णव मुझे भोग लगाये। ठाकुर जी पूर्ण निष्काम हैं। भगवान् तो भक्तों को राजी करने के लिये आरोगते हैं। भगवान् के घर क्या कमी है? यह सब कुछ उनका ही दिया हुआ है। भगवान् को भोग न धरो, उससे भगवान् भूखे रहने वाले नहीं, परंतु तुमको किसी भी दिन भूखे रहने का प्रसंग आ जायगा। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में।

भगवान् को भूख लगती ही नहीं। भगवान् तो तुम्हारे भावको देखते हैं। अपने शरीर से जितना प्रेम रखते हो, उससे विशेष प्रेम भगवान् में रखो। घरमें कोई जीमने वाला न हो तो भी भगवान् के लिये रसोई बनाओ। जिस घर में भगवान् के लिये रसोई होती है, उस घरमें अन्नपूर्णा विराजती हैं, उस घर में अन्न की कभी कमी नहीं पड़ती।

भगवान् के भोग लगाते हुये – बोलो –

कायेन वाचा मनसैन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतः स्वभावात् | करोमि यद् यद् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत् ||

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

श्री डूंगजी जुहारजी शेखावाटी के प्रथम स्वाधीनता सेनानी

फाल्गुन मास का शुक्ल पक्ष, दशमी का दिन, शुभ्र व स्वच्छ आकाश पर अर्द्ध चन्द्र अपनी ज्योत्सना बिखेर रहा था। ठण्डी ठण्डी हवा के झोंके चल रहे थे। प्रकृति सुषमा से सरोबार हो धरती फूलों के साथ साथ फाल्गुनी उत्साह में सहयोग कर रही थी। चंग की थापों के साथ

कृषक वर्ग धमालें गा रहा था। बस्ती के बीच नगाड़े का घोष व घुंघरूओं का समवेत स्वर नृत्य करते युवाओं के डण्डियों से ताल मेल बैठा रहा था। "घलै गींदड़ बजै डंको" की ध्वनि गूंज रही थी। होली के राग रंग में उत्साह से निमग्न हो गढ़ बठोठ की छत पर युवा कुंवर जवाहरसिंह की महफिल जम रही थी जिसमें गायिकाएं ढ़प के साथ मधुर कण्ठ ध्वनि से कानों में रस घोल रही थी। महफिल में केशरिया व कसुमल पाग पहिने राजपूत सरदारों के साथ साथ लोटसिंह जाट व करणसिंह मीणा भी गीतों का रसास्वादन कर रहे थे। कलाल जी जान से तैयार की हुई दारू की बोतलें लिये बैठे थे। डावड़ियों ने रजत प्यालों में केशर व कस्तूरी के जाम भर कर सरदारों की मनुहारें प्रारम्भ की। दारू का दौर शुरू हुआ। इसके साथ ही कोकिल कण्ठी गायिकाओं के स्वर फूट पड़े।"दारू म्हारी दाखां री भर ल्याई रे भंवर कलाल दारू म्हारी लाखारी, घड़ी दोय खम्मा करो तो मदिरा रा प्याला ल्याऊ, ओ राज आवैला म्हारा मद छकिया भंवर ज्यानै थोड़ी थोड़ी पाज्यो ए दारूड़ी दाखा री...." महफिल परवान पर चढ़ी थी। कलालों और ढ़ाढ़णियों को न्यौछारी बख्शीश की जा रही थी रजत मुद्राओं की झंकार ने गायिकाओं और कलालों को द्विगुणित उत्साह प्रदान कर रखा था।

महफिल के गीतों की ध्वनि रावले की सीमा को लांघ कर विरह वेदना से ग्रस्त ठकुराईन के कानों में पिघला हुआ शीशा भर रही थी। उसके प्रियतम गढ़ आगरा की जेल में वर्षों से कैद थे गले में तोख और पैरों में बेड़ियों का बोझ तो उन्हें इतना नहीं खल रहा था परन्तु धोरों वाली धरती की याद रह-रह कर उन्हें विचलित कर रही थी। अंतःपुर की नायिका के कैदी पति बठोठ के ठाकुर डूंगरसिंह थे जिन्हें फिरंगी आगरा जेल से कालापानी भेजने की तजबीज कर रहे थे। विरहाग्नि से पीड़ित नायिका ने अंतःपुर की मर्यादा का उल्लंघन कर गढ़ की छत पर जमी हुई महफिल में पदार्पण किया पूरी सभा सन्न रह गई। किसी ने यह कल्पना भी न की थी कि ठा. डूंगरसिंह की अर्द्धांगिनी पर्दे का परित्याग कर पुरुषों की महफिल में आ जायेगी। ठकुराईन के नथूने क्रोध से फूले हुए थे। आँखों में रक्त उतर रहा था। केश राशि रूक्ष एवं बिखरी हुई थी आते ही ठकुराईन ने अपने जेठूते जवाहरसिंह से कहा "थानै आ महफिल कैया चोखी लागे है ? काको सा तो किलै आगरे में कैदी बण्या थारी बांटा जोवै है थे रागरंग में मस्त होरिया हो" अर्थात् आपको यह महफिल कैसे अच्छी लग रही है ? आपके काका तो आगरे के दुर्ग में बंदी बने आपका पथ देख रहे हैं आप राग रंग में मस्त हो रहे हो।

जवाहरसिंह ने सहमते हुए खड़े होकर कहा "हुकुम काकीसा बड़ा बड़ा दिग्पाल फिरंग्या कै आगे घुटना टेक दिया जैपुर, जोधपुर का धणी हाथ बांध कर खड्या होवै है, म्है कैयो फिरंग्या को सामनू करां ? ठकुराईन ने गरज कर कहा बन्ना थानै इसी मर्दानगी पर घणी घणी बधाई, म्हाकी चूड्या पैरो ओढ़णु ओढल्यो मैं आगरे जास्युं कै तो आपका काकोसा आजाद होवैला नहीं तो फिरंग्या नै काट कर कटज्यास्यूं पण आप आगे से तलवार की मूठ पकड़बा जस्या नहीं रहवोला.....। जवाहरसिंह की भुजाएं फड़क उठी। • उसकी जवानी जौहर दिखाने को उतावली हो गई। तत्काल दारू की प्यालिया फेंक कर साथियों को ऊटों पर काठी कसने का हुक्म • दिया। जवाहरसिंह के अभिन्न मित्र और साथी लोटसिंह (लोटिया जाट) और करणसिंह (करणिया) मीणा ने युवा कुंवर को परामर्श दिया। चंद साथियों की टोली आगरे में पतंगों की तरह खत्म हो जायेगी पहले हमें पता लगाने दो, हमला बाद में किया जायेगा।

लोटसिंह व करणसिंह तेज सांडणी (ऊंटनी) पर सवार हुए और आगरे से पूर्व फतेहपुर - सीकरी की सराय में सांडणी को सम्भला कर पैदल ही आगरे की ओर चले और साधुओं की मण्डली में शामिल हो साधुओं का जामा पहन लिया। लोटसिंह मौनी बाबा बन गए और करणसिंह उनके सेवक या चेले.....बाबा की धूणी आगरा दुर्ग की खाई के पास ही लगा ली गई।

एक दो दिन में करणसिंह ने प्रचार कर दिया मौनी बाबा है पलक लगाए हुए हैं केवल नित्य कर्म व स्नान के समय ही पलक तोड़ते हैं। वर्षों से मौन. साधना कर रहे हैं बाबा के भक्तों की संख्या

बढ़ने लगी। भजन कीर्तन भी धूणी के निकट होने लगे। अंग्रेज अफसरों को आगरा दुर्ग के निकट यह जमघट अच्छा नहीं लगा परन्तु अनेक हिन्दुस्तानी सिपाही भी बाबा के मुरीद बन चुके थे। कई बार अंग्रेज साहब भी धूणी पर बाबा को देखने आ जाते। एक बार एक बड़े साहब का भी आना हुआ । चेला बने करणसिंह ने साहब से कहा अब बाबा आगे तीर्थों पर जाना चाहते हैं । जाने से पूर्व इन्हें आगरे का किला देखने की अनुमति मिल जाये तो हमारी किला देखने की आंकाक्षा पूर्ण हो जायेगी। अंग्रेज साहब ने इनके कार्य कलाप में कोई आपत्तिजनक बात नहीं देखी किला देखने की अनुमति मिल गई।

गुरू-शिष्य गढ़ में दाखिल हुए किला किसे देखना था ? उन्हें तो आने जाने का सुगम रास्ता देखना था और जेल में कैद ठाकुर डूंगरसिंह को खोजना था। पूरा दुर्ग देखने के बाद करणसिंह कैदखाने की ओर चला पहरेदारों ने पहले तो रोका परन्तु साधुओं से जेल को क्या खतरा ? फिर बड़े साहब की अनुमति, दोनों साधु जेल की कोटड़ियों को देखने लगे। अपने ठाकुर डूंगरसिंह की दशा देखकर दोनों की आँखे भर आई परन्तु स्वयं को संयत कर आँखों के संकेत से शीघ्र आने का वादा कर लोटसिंह व करणसिंह फतेहपुर सीकरी की उसी सराय में वापस आकर सांडणी सवार बन बठोठ की ओर रवाना हुए। ठाकुर जवाहरसिंह की कमान में ऊँटों व घोड़ों पर एक छोटी सी टुकड़ी आगरे की ओर उन्मुख हुई। फतेहपुर सीकरी की उसी सराय में ठहर कर टुकड़ी बारात में बदल गई।

जवाहरसिंह को दुल्हा बनाया गया। बारात आगरा दुर्ग के निकट पहुँच कर रूक गई। यहाँ एक नकली दुर्घटना की गई दुल्हे के मामा सरदार मीढासिंह की मृत्यु का समाचार फैला दिया गया और एक नर भेड़ को मार कर उसका दाह संस्कार कर दिया। पूरी बारात शोक निमग्न हो गई। आगरा दुर्ग के सुरक्षा कर्मियों ने वहां से हटने को कहा इस पर बड़ी शालीनता से उत्तर दिया गया कि दुल्हे के मामा की मौत होने से शोक हो गया है। शोक शमन होते ही चले जायेंगे। राजघराने से संबंधित बारात है।

इसी बीच बड़ा दिन क्रिशमस का त्यौहार आया। आगरा दुर्ग आम जनता के लिए खोल दिया गया। अंग्रेज त्यौहार मनाने में लग गए। बाराती भी दुर्ग देखने चले गए। लोटसिंह ताकत का धणी था कहते हैं कि सिर पर साफा बांध कर टक्कर से दीवार गिरा देता था। करणसिंह फौलादी तालों को खिलौने समझता था। दोनों प्रबल योद्धा जेल में दाखिल हुए करणसिंह ने ताला तोड़ डाला और डूंगरसिह की तोख व बेड़ी निकाल कर फैंक दी तथा चलने का अनुरोध किया। परन्तु डूंगरसिंह भी तो आखिर शेरदिल था। उसने चोरों की तरह भागना कायरता समझा और कहा मेरे जैसे सैंकड़ों बेकसूर यहाँ बंद है उन्हें भी मुक्त कराओ..... करणसिंह ने पूरी जेल के ताले तोड़ दिए। कैदी मुक्त हो गए जोश में भरे एक एक कैदी में सौ सौ सैनिकों की शक्ति आ गई। जेल में मारकाट मच गई। सम्पूर्ण आगरा दुर्ग कोलाहल से भर गया तब तक अंग्रेज सचेत हुए डूंगजी जवाहर जी की कमान में लोटसिंह (लोटिया) व करणसिंह (करणिया) इंक डंका (नगाड़ा) बजाते हुए सैंकड़ों मुक्त कैदियों के साथ आगरा दुर्ग से बाहर आ गए।

इतिहास में छत्रपति शिवाजी भी आगरा की जेल से बादशाह औरंगजेब के सेनापतियों व सुरक्षा कर्मियों को चकमा देकर छल से निकले, किन्तु शेखावाटी के ये से क्रांतिकारी सूरमा डंके की चोट बलपूर्वक फिरंगी शासकों की गिरफ्त से आजाद होकर निकले।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इन अजय सेनानियों ने अनेक मुल्कों पर राज करने वाले फिरंगियों को चेतावनी देते हुए आगरे से अपनी मातृभूमि की ओर प्रयाण किया।

डूंगजी – जवाहरजी की टुकड़ी ने नसीराबाद छावनी का खजाना लूट कर पुष्कर तीर्थ के घाटों पर जनता को अंजलि भर भर कर चांदी के रूपये बांट दिये तथा मौका मिलते ही अंग्रेजों पर छापे मारते व खजाने लूट लेते। ब्रिटिश अफसरों ने इन्हें बागी व डाकू करार दे दिया और पकड़ने के लिए बड़ी बड़ी टुकड़ियां चारों और फैला दी।

इतिहास में इन सेनानियों को डूंगजी जवाहरजी के नाम से पुकारा जाता है इन्होंने भारतीय राजे महाराजाओं और नवाबों से मिलकर अंग्रेज शासकों के चंगुल से देश को मुक्त करवाने का स्वप्न संजोया और प्रयत्न भी किया। काश राजे रजवाड़े इन्हें समझे जाते तो देश में 1857 से पूर्व ही क्रांति व स्वाधीनता का प्रथम महासमर आयोजित हो जाता परन्तु राजाओं एवं नवाबों के दिल व दिमाग पर गुलामी का संक्रामक रोग अपना अधिकार जमा चुका था। फलतः डूंगजी जवाहरजी ने अपने ही बल पर लोहा लेने का निर्णय लिया परन्तु हथियारों व सैनिकों के खर्च के लिए धन चाहिए अपने देशवासियों को डूंगजी जवाहरजी लूटते नहीं थे। आखिर रामगढ़ शेखावाटी के पोद्दार सेठों से इन्होंने धन उधार चाहा। पोद्दार सेठ ईस्ट इण्डिया कम्पनी के फाइनेंसर रहे हैं। उन्होंने कहा यदि हम आपको धन देंगे तो अंग्रेज हमें जिन्दा नहीं छोड़ेंगे आप हमें लूट कर ले जा सकते हैं।

डूंगजी जवाहरजी ने रामगढ़ पर धावा किया और सेठों ने अपनी तिजोरियां खुली छोड़ दी डूंगजी जवाहरजी ने खून का एक कतरा भी नहीं बहाया। सेठों को हवेलियों के खम्भों से बंधकर रुपयों की थैलियां ऊँटों पर लाद ली, धन भी मिल गया और सेठ भी बच गए।अब इन सूरमाओं की शक्ति बढ़ गई थी। अंग्रेज अफसर भयभीत थे। अनेक मुठभेड़ों में अंग्रेजों को मात खानी पड़ी। आखिर सीकर के रावराजा रामप्रतापसिंह को दबाया गया और उनसे नसीराबाद की लूट की वसूली की गई। सीकर राज्य की शक्ति के ताबे में डूंगजी जवाहरजी कब आने वाले थे ? आखिर अंग्रेजों ने जोधपुर बीकानेर के शासकों से सहायता ली मारवाड़ व बीकानेर के गाँव गाँव में राजाओं की सेना फैल गई। बाड़ खेत को खाने लगी। स्वाधीनता की धधकती आग को जोधपुर व बीकानेर के राजाओं ने बुझाने का प्रयत्न किया। इंगजी जवाहरजी जोधपुर व बीकानेर के शासकों के पास पहुंच कर उनसे बोले फिरंगियों के हाथों से मरने की अपेक्षा हम अपने भाईयों के हाथ बलि की वेदी पर न्यौछावर होना चाहते हैं, आप हमारा वध करने के लिए स्वतंत्र है। इन दोनों राजाओं ने देश काल व परिस्थितियों का बखान करते हुए सुरमाओं समझाया तथा ब्रिटिश हकूमत से अनुबंध कर इन्हें अपनी देखरेख में रहने का वचन लेकर स्वाधीनता सेना को भंग करवा दिया और इन सेनानियों ने जोधपुर व बीकानेर में रहते हुए अपनी जीवन यात्रा पूर्ण की किन्तु जब तक जीवित रहे अपने मन में आजादी व मुक्त तथा स्वतंत्र भारत का स्वप्न संजोये रहे। इन सेनानियों को नमन है, प्रणाम है, वन्दन है, अभिनन्दन है।

- श्री महावीर पुरोहित

बोरवेल में गिरे चार साल के रवीन्द्र को 26 घंटे बाद सुरक्षित निकाला

एनडीआरएफ, सिविल डिफेंस, जिला प्रशासन और ग्रामीणों के संयुक्त प्रयास से जिंदगी बची मासूम की

खाटूश्यामजी | लिखमाकाबास में बिजारणिया वाली ढाणी में बोरवेल के होल में फंसे 4 •साल के मासूम को शुक्रवार को 26 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद सुरक्षित निकाल लिया गया। रवीन्द्र (गुड्डू) गुरुवार को खेलते समय बोरवेल में गिर गया था। कलेक्टर एसपी से लेकर एसडीआरएफ, एनडीआरएफ की टीम ने होल से 5 फीट दूर 57 फीट गहरा दूसरा गड्ढा सीमेंट के फार्मे डालकर खोदा। सुरंग बनाकर मासूम को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया। गुरुवार रातभर निकालने की कोशिश जारी रही।

खेलते समय गुरुवार को गिरा था

- गुरुवार दोप. 03:30 बजे बोरवले में गिरा गुड्डू
- 03:50 बजे प्रशासन, 4:00 बजे सिविल डिफेंस, शाम 7 बजे जयपुर सिविल डिफेंस और 8:30 बजे अजमेर से एनडीआरएफ टीम पहुंची।
- शुक्रवार शाम 5 : 30 बजे निकला।

धोद में खेल स्टेडियम से युवाओं को मिलेगा फायदा-मोरदिया

क्षेत्र के लोगों ने विधायक मोरदिया का जताया आभार

लोसल। धोद विधायक परसराम मोरदिया द्वारा धोद में खेल स्टेडियम एवं लोसल नगरपालिका क्षेत्र में 15 किमी सड़कें स्वीकृत करने पर क्षेत्रवासियों ने आभार व्यक्त किया।

विधायक का साफा पहनाकर स्वागत किया गया। मोरदिया के मीडिया प्रभारी राकेश जाट ने बताया कि लोसल ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष इस्माइल नागौरी के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने लोसल में इंग्लिश मीडियम स्कूल, ट्रॉमा सेंटर, पीएचईडी का एईन कार्यालय ए ए श्रेणी का पशु चिकित्सालय, राजकीय छात्रावास खोलने का अनुरोध किया। विधायक ने सभी मांगों को शीघ्र पूरा करने का आश्वासन दिया।

इस दौरान मोरदिया ने कहा कि 'धोद मुख्यालय पर खेल स्टेडियम बनने से सेना भर्ती में भाग लेने वाले क्षेत्र के युवाओं को फायदा मिलेगा। धोद क्षेत्र से बड़ी संख्या में युवा देश की रक्षा के लिए भारतीय सेना में अपनी सेवा देते हैं। इसके अलावा 10 करोड़ रुपए की लागत से नवीन सड़कें बनेगी तथा विभिन्न गांवों में विद्यालय क्रमोन्नत एवं नए इंग्लिश मीडियम स्कूल खोले जाएंगे।

इस मौके पर लोसल ब्लॉक अध्यक्ष इस्माईल नागोरी, नगरपालिका उपाध्यक्ष रामनिवास बाजिया, पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल कुमावत अब्दुल सत्तार सांवरमल मंडीवाल नेमीचंद सैनी, मनोज सैनी, बंटी खेतान, दीनदयाल बाकोलिया, मुस्ताक महेंद्र रणवा सलीम खुर्शीद बिसायती, अवदेश शर्मा, नागौरी, मोहम्मद अली नागोरी शिवभगवान रणवा, शिवपाल रणवा, रामेश्वर बाजिया, हनुमान झाझडा, श्रवण टी स्टॉल, रामेश्वर गोदारा, इमरान रंगरेज, ललित बजाज, अब्बास नागोरी, जमील तेली, महेश चोटिया, मुकेश वर्मा व बाबूलाल मारवाल आदि मौजूद रहे।

राजनीतिक नियुक्तियां • लक्ष्मणगढ़ के सांवरमल को धरोहर संरक्षण प्राधिकरण का उपाध्यक्ष व लांबा को युवा बोर्ड अध्यक्ष बनाया

अपनों के लिए खोली पोटली; हाकम अली बने वक्फ विकास परिषद् चेयरमैन, महादेवसिंह को किसान आयोग की कमान

"सीकर से 4 नियुक्तियां | इन सभी में सीएम गहलोत ने पायलट गुट के विधायको, दीपेंद्रसिंह व सुरेश मोदी की अनदेखी की |

गहलोत सरकार ने बुधवार रात विभिन्न बोर्ड, निगम व आयोग में 58 जनप्रतिनिधियों को नियुक्ति दी। जिले से दो विधायकों सहित चार नेताओं को मौका दिया गया है। पायलट गुट के श्रीमाधोपुर विधायक दीपेंद्रसिंह शेखावत व नीमकाथाना विधायक सुरेश मोदी को दरकिनार करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ये नियुक्तियां की।

इनमें फतेहपुर विधायक हाकम अली को राजस्थान वक्फ विकास परिषद का अध्यक्ष बनाते हुए अल्पसंख्यक वर्ग को खुश करने की कोशिश की है। खंडेला विधायक महादेवसिंह को राजस्थान किसान आयोग का चेयरमैन बनाया गया है। दांतारामगढ़ क्षेत्र के सीताराम लांबा को राजस्थान युवा बोर्ड का अध्यक्ष व लक्ष्मणगढ़ कस्बे के सांवरमल महरिया को राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण का उपाध्यक्ष बनाया गया है।

नियुक्तियों के राजनीतिक मायने

पिछले दिनों मंत्रिमंडल विस्तार के दौरान डोटासरा से एक पद एक व्यक्ति सिद्धांत के तहत शिक्षा मंत्रालय वापस ले लिया गया था। जिले के अन्य दिग्गज नेताओं को भी मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किया गया। इसकी भरपाई के लिए जिले से चार बड़ी नियुक्तियां की गई है। अगले विधानसभा चुनाव को देखते हुए जातिगत वोट बैंक को साधा गया है। नियुक्तियों में तीन जाट समाज और एक अल्पसंख्यक समुदाय से है।

महादेवसिंह खंडेला

इसलिए मिला मौका : गहलोत के नजदीकी होने का फायदा मिला। निर्दलीय जीतने के बाद सबसे पहले गहलोत को समर्थन दिया था। **राजनीतिक पृष्ठभूमि:** खंडेला विधानसभा से छठी बार विधायक बने हैं। एक बार सांसद व केंद्र में मंत्री रहे हैं। बेटा गिरिराज खंडेला प्रधान हैं। पत्नी पार्वती दो बार प्रधान रही हैं।

भावी योजना : महादेवसिंह खंडेला का कहना है कि किसानों को उपज का पूरा पैसा दिलाने, नजदीकी स्तर पर मार्केट की सुविधा और अनुदान से जुड़ी योजनाओं पर काम करेंगे। ताकि खेती को घाटे से उबारा जा सके। जिन इलाकों में भूमिगत पानी नहीं हैं। वहां अन्य योजनाएं लाने का प्रयास करेंगे।

हाकम अली

इसलिए मिला मौका : शेखावाटी में अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिये।

राजनीतिक पृष्ठभूमि : फतेहपुर विधायक व पीसीसी के महासचिव हैं। विधानसभा में पर्यावरण समिति सदस्य व अल्पसंख्यक मामलात कमेटी के सदस्य भी हैं। बड़े भाई मरहूम भवरूं खान लगातार तीन बार विधायक रहे हैं।

भावी योजना : वक्फ बोर्ड चेयरमैन के साथ समन्वय बनाकर काम करेंगे। सबसे सुझाव लेकर योजनाएं तैयार की जाएंगी। मदरसों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए प्रस्ताव तैयार करेंगे, ताकि बच्चे कंप्यूटर एजुकेशन आदि से लाभान्वित हो सकें।

सीताराम लांबा

इसलिए मिला मौका : कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी की टीम से. जुड़कर इलाके में लगातार सक्रिय रहने का फायदा मिला। **राजनीतिक पृष्ठभूमि :** दांतारामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के सीताराम लांबा यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव हैं। किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाले लांबा पूर्व में जिला परिषद् सदस्य रहे हैं।

भावी योजना : लांबा का कहना है कि युवाओं से जुड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं। अब जिम्मेदारी बढ़ गई है। युवाओं के स्वरोजगार एवं खेलकूद पर फोकस किया जाएगा। जिला स्तर पर युवा सशक्तिकरण केन्द्र खोले जाएंगे। युवाओं से जुड़े कार्यक्रमों को गैर सरकारी संगठनों को जोड़ा जाएगा।

सांवरमल महरिया

इसलिए मिला मौका : लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र के प्रतिनिधित्व के लिये।

राजनीतिक पृष्ठभूमि : परिवार तीन पीढ़ियों से कांग्रेस पार्टी के साथ जुड़ा है। सांवरमल 1980 से कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं। मंडावा व सुजानगढ़ विधानसभा क्षेत्र के उप चुनाव में सक्रिय भूमिका निभाई।

भावी योजना : राजस्थान की धरोहर के संरक्षण का प्लान बनाएंगे। इसमें शेखावाटी की हवेलियों को प्रमुखता से शामिल करेंगे। युवा पीढ़ी को संरक्षण अभियान से जोड़ा जाएगा, ताकि यह मुहिम लगातार जारी रह सके। संरक्षण से वंचित ऐतिहासिक चीजों को चिन्हित किया जाएगा।

नारायण सिंह भी रहे चुके हैं किसान आयोग चेयरमैन : पिछली गहलोत सरकार में दांतारामगढ़ के पूर्व विधायक व कांग्रेस के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष चौधरी नारायणसिंह किसान आयोग अध्यक्ष रह चुके हैं। सीकर जिले को दूसरी बार किसान आयोग अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली है।

अच्छे नेताओं को जिम्मेदारी दी गई है : सुरेश मोदी : आप जो नाम बता रहे हैं, वे पार्टी के निष्ठावानन्न जनप्रतिनिधि हैं। अच्छे नेताओं को जिम्मेदारी दी गई है। -सुरेश मोदी, नीमकाथाना विधायक

अमित अध्यक्ष व चिराणिया मंत्री बने

लक्ष्मणगढ़ | लाल कुआं गींदड़ समिति की बैठक शनिवार को समिति के स्थानीय कार्यालय में हुई। कार्यक्रम संयोजक जयशंकर पुजारी ने बताया कि बैठक में समिति की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें पार्षद अमित कुमार जोशी को अध्यक्ष, भगवती प्रसाद चिराणिया को मंत्री तथा विनोद जैन को कोषाध्यक्ष चुना गया। नवीन काछवाल, पार्षद विष्णु शर्मा तथा विनोद पाराशर को उपाध्यक्ष, महेंद्र सैनी सहकोषाध्यक्ष, लक्की ओझा, मोहित पाराशर, आयुष मिश्रा, अमन जोशी, दिनेश शर्मा, कमल सैन, विक्रम सैनी, हर्षित जोशी, किशन सैन, विकास सैनी को कार्यक्रम व्यवस्थापक चुना गया। सुरेश जाजोदिया, महेंद्र काछवाल, जयप्रकाश जाजोदिया, दीनदयाल जोशी, सुरेश चिरानिया, मधु डीडवानिया, पुरुषोत्तम चोटिया, राहुल सैनी, संजय सैनी आदि को समिति का संरक्षक बनाया गया है। बैठक में 15 मार्च से शुरू होने वाले चार दिवसीय होली कार्यक्रमों के आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई। समिति के अध्यक्ष अमित जोशी के अनुसार 15 से 17 मार्च तक गींदड़ नृत्य तथा धुलंडी के दिन गेर का जुलूस धूमधाम से निकाला जाएगा।

शोक – सम्वेदना

श्री नित्यानन्द हुडीलवाल का दि. 2 फ़रवरी 2022 हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया। वे हिन्दी एवं राजस्थानी के प्रतिभाशाली कवि श्री रामगोविन्द हुडीलवाल के अनुज थे। वे अत्यन्त मिलनसार एवं हँसमुख थे | गत 7 दिसम्बर को अपने अग्रज रामगोविन्द के निधन से वे अत्यन्त व्यथित थे। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शाश्वत शान्ति एवं उनके परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्तजोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थानकृष्णाप्रिन्टर्स के लिये सागरकम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित,प्रबन्ध सम्पादक- डॉ महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी